RNI No - RAJHIN/2003/9899, Postal Registration No - Sri Ganganagar/105/2018-2020
Published on 01 August 2019, Posted at RMS, Sri Ganganagar on 2nd or 3rd August 2019

मासिक पत्रिका

अजायब ✲ बानी

वर्ष : सत्रहवां
अंक : चौथा
अगस्त : 2019

5
(महाराज कृपाल सिंह द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब)
मैं आपके अंतर में हूँ

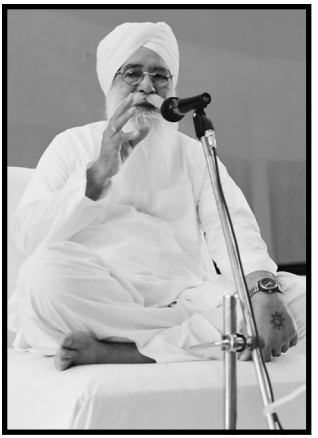

13
सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
अजायब कृपाल नूं याद करदा

25
सतसंग–परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज
हम कैसे जागें ?

34
16 पी. एस. आश्रम में सतसंग के कार्यक्रमों की जानकारी
धन्य अजायब

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** उप संपादक : **नन्दनी**
96 67 23 33 04, 99 28 92 53 04 सहयोग : **परमजीत सिंह, ज्योति सरदाना**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक व संपादक : प्रेम प्रकाश छाबड़ा ने पोलिकम ऑफसेट, नारायणा, फेस-1, नई दिल्ली से छपवाकर सन्तबानी आश्रम 16 पी.एस. रायसिंह नगर - 335 039 जिला - श्री गंगानगर (राजस्थान) से प्रकाशित किया।

99 50 55 66 71 80 79 08 46 01 - 209 - मूल्य - पाँच रुपये

e-mail : dhanajaibs@gmail.com Website : www.ajaibbani.org

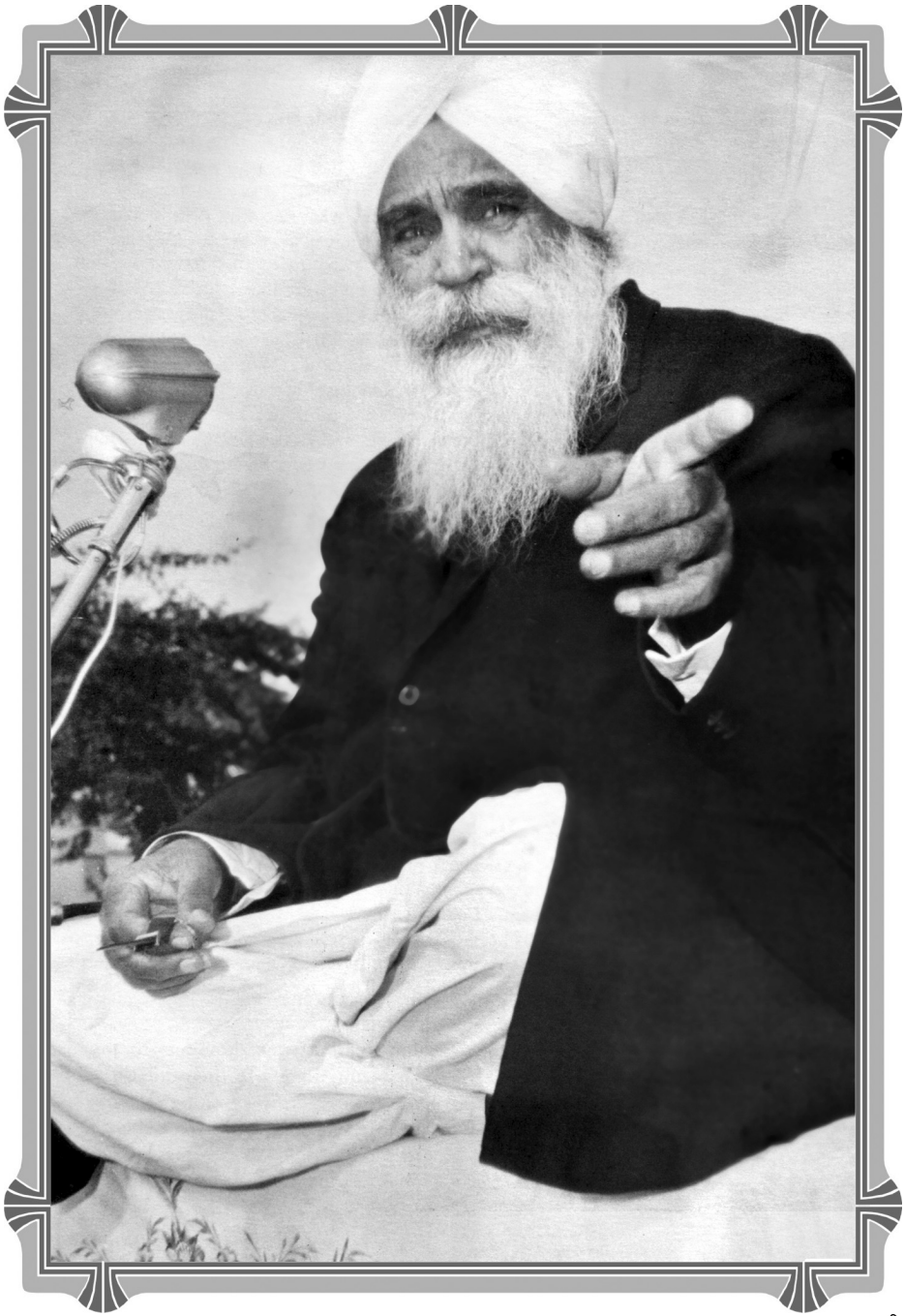

परम सन्त कृपाल सिंह जी महाराज ने यह संदेश (सवालों के जवाब) ज्योति–ज्योत समाने से एक सप्ताह पहले 14 अगस्त 1974 को सावन आश्रम में दिया था।

मैं आपके अंतर में हूँ

एक प्रेमीः *महाराज जी! आप हम लोगों पर हर रोज बहुत रहम बरसाते हैं, हमारे ऊपर बहुत दया करते हैं। उसका आभार प्रकट करने के लिए हम अपने अंदर किस तरह ज्यादा प्रेम व श्रद्धा विकसित कर सकते हैं?*

महाराज जीः मैं बूढ़ा हो चला हूँ और आप अभी जवान हैं लेकिन क्राईस्ट पावर कभी बूढ़ी या जवान नहीं होती। वह सदा ही जवान और तरोताजा रुप में काम करती रहती है। एक दफा जब नाम का बीज बोया गया तो संसार की कोई भी ताकत उसे उखाड़ नहीं सकती। तसल्ली रखें! सतगुरु आपको कभी नहीं छोड़ेगा।

एक प्रेमीः *मैंने कहीं पढ़ा है, कभी -कभी मेरे मन में यह बात आती है कि आपके सतगुरु सावन सिंह जी महाराज पिछले अवतार में कबीर साहब थे, क्या यह सही है?*

महाराज जीः सभी सन्तों में एक ही ताकत काम करती है। कबीर साहब और बाकी सभी सन्तों में वह देहधारी शब्द है। वह शब्द कभी कबीर के रुप में और कभी किसी और सन्त के रूप में प्रकट होता है, शब्द कभी नहीं बदलता।

अगर आपका मित्र आज सफ़ेद सूट पहनकर आए कल पीले रंग के कपड़े पहनकर आए और तीसरे दिन खाक़ी रंग के कपड़े पहनकर आए तो क्या आप उसे पहचानेंगे नहीं? मैं आशा करता हूँ कि आप अपने मित्र को पहचानेंगे।

एक प्रेमीः *हम किस तरह बेहतर आचरण प्राप्त कर सकते हैं?*

महाराज जीः आप Seven Paths to Perfection नामक किताब पढ़े। इस किताब को पढ़ने से आपका स्वभाव बदल जाएगा। सबसे पहले हमने अपने मन के बाहरी ख्यालों को शुद्ध करना है। सभी महात्माओं ने कहा है, ''जो मुझसे ज्यादा अपने बच्चों से, माता-पिता से और रिश्तेदारों से प्रेम करते हैं वे मेरे शिष्य नहीं हैं।'' महात्मा, परमात्मा के प्रेम में सब कुछ कुर्बान कर देते हैं।

एक प्रेमीः *महाराज जी! कल आप यहाँ नहीं थे तो हम सब निराश हो गए थे, हम आप पर निर्भर होते जा रहे हैं?*

महाराज जीः जो आपके अंतर में है उस पर निर्भर होना बेहतर है, वह हमेशा आपके साथ है। अगर आप सोचते हैं कि वह दूर है तो वह दूर ही होगा फिर उसे आने में वक्त लगेगा अगर आप यह सोचते हैं कि वह यहीं है तो वह तुरंत आ जाएगा।

आपने महाभारत में सुना है कि कौरवों ने द्रौपदी को जीत लिया था। कौरव द्रौपदी का चीर हरण करने लगे। उसके सिर से साड़ी का पल्लू उतारने लगे। आजकल नंगे सिर बैठना एक फैशन या आदर का सूचक बन गया है लेकिन पिछले जमाने में नंगे सिर बैठना अनादर का प्रतीक माना जाता था।

द्रौपदी चिल्लाई, ''कृष्ण भगवान आओ! मुझे बचाओ मेरा अपमान हो रहा है।'' दुशासन ने द्रौपदी के सिर से साड़ी खींच ली। इतने में वहाँ भगवान कृष्ण प्रकट हुए और साड़ी नहीं उतारी जा सकी। द्रौपदी ने भगवान कृष्ण से कहा, ''कृष्ण तुम देर से आए, अब आने का क्या फ़ायदा जब मेरे सिर से साड़ी का पल्लू खींच लिया गया है?'' भगवान कृष्ण ने द्रौपदी से पूछा, ''तुमने मदद के लिए किससे गुहार लगाई थी?'' द्रौपदी ने कहा, ''मैंने वृंदावन

वासी कृष्ण के लिए पुकारा था।'' कृष्ण ने कहा, ''मुझे वृंदावन से आना था इसलिए समय लग गया। मैं तुम्हारे अंदर हूँ अगर तुमने मुझे वहाँ से पुकारा होता तो मैं तुम्हें उसी समय बचा लेता।''

कभी भी दूसरों पर निर्भर न रहें, मदद सभी की तरफ आ रही है। आप सतगुरु के बिना कभी भी अकेले नहीं हैं। परमात्मा ने यह वायदा किया है, ''मैं तुम्हें इस संसार के अंत तक न भूलूगाँ और न ही छोड़ूँगा।''

एक प्रेमी: *मैं सबसे पहले आपका धन्यवाद करना चाहता हूँ कि मुझे यहाँ आकर बहुत खुशी हुई। मैं सरकार द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त कार्यक्रम का एक छात्र हूँ। हमें निर्देशकों के सुझाव से और अपने आप कुछ सांस्कृतिक गतिविधियों व कार्यक्रमों में जाना पड़ता है। आप मुझे उन अवसरों का बेहतर फ़ायदा उठाने के लिए कोई सुझाव दें; उदाहरण के लिए जैसे कल 15 अगस्त भारत का स्वतंत्रता दिवस है?*

महाराज जी: मैं आप सबकी स्वतंत्रता की कामना करता हूँ। पराधीनता एक घोर अपराध है। कभी किसी पर निर्भर न रहें। आपको ऊपर जाने के लिए बाहर से मदद मिल सकती है। परमात्मा ने कहा है, ''**मैं आपके अंतर में हूँ**।'' आप कल स्वतंत्रता दिवस का आनंद कैसे उठाएंगे?

एक प्रेमी: *अगर आपकी इजाज़त हो तो मैं प्रधानमंत्री श्रीमति इंदिरा गांधी के भाषण में भाग लेने जा सकता हूँ?*

महाराज जी: आप जा सकते हैं लेकिन वहाँ जाकर आप स्वतंत्र नहीं हो सकते। बाहर से सब कुछ समेटना ही उत्तम स्वतंत्रता दिवस है। आप अपनी इस संकरी अंधेरी गुफा से बाहर आएँ और

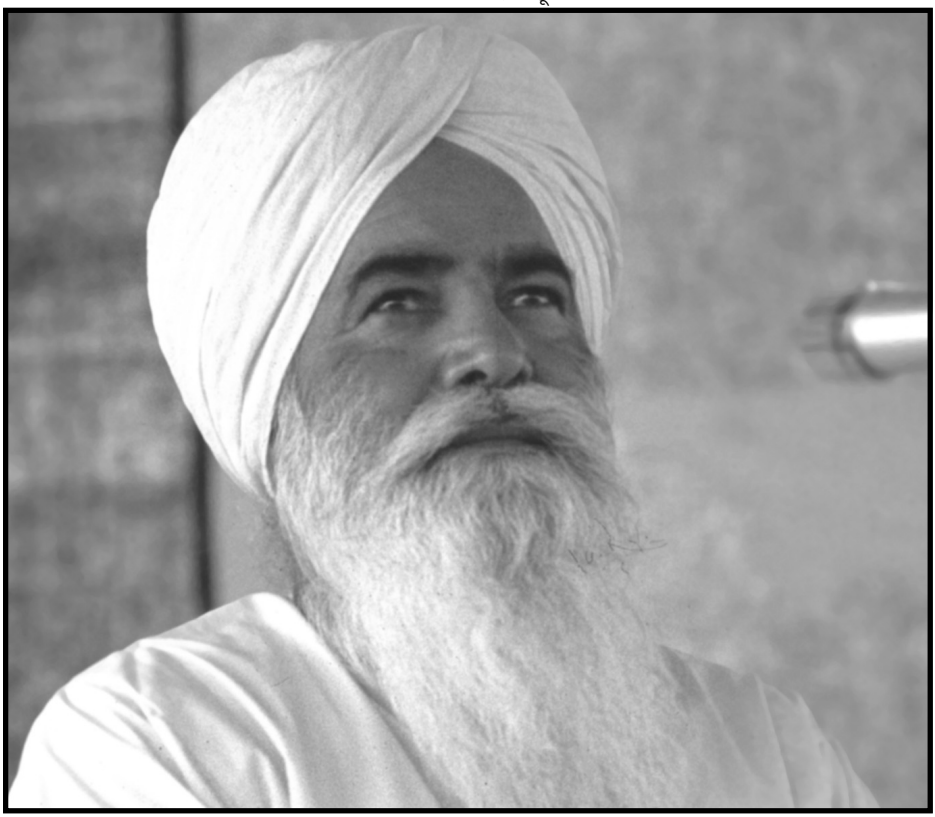

ऊपर आकर उस पार जाएँ जो आपको बिना शर्तों वाले परमात्मा की ओर ले जाएगा। आप उस ताकत के सम्पर्क में आएं जो परमात्मा है लेकिन स्वतंत्र होते हुए भी आप बँधे हुए हैं। हर इंसान अपने ही तरीक़े से बँधा हुआ है। जब आप स्वतंत्र होते हैं तो आप परम आनन्द महसूस करते हैं और स्वतंत्रता फैलाते हैं।

एक प्रेमी: *महाराज जी! हम स्वतंत्रता फैलाएँगे?*

महाराज जी: कल के आयोजन में प्रधानमंत्री का भाषण सुनने के लिए हजारों लोग इकट्ठे होंगे। वे लोग प्रधानमंत्री को सम्मान देने के लिए जाएँगे अगर आपने आज सुबह भी मुझसे कहा होता

तो मैं आपके लिए सीट का इंतजाम करवा देता लेकिन अब आपको खड़े रहना होगा। आप यह प्रोग्राम टेलिविजन में भी देख सकते हैं।

एक प्रेमी: *क्या आप यह प्रोग्राम देखेंगें?*

महाराज जी: मुझे इसकी जरुरत नहीं। शायद मैं देखूँगा या नहीं देखूँगा! मैं इनसे बँधा हुआ नहीं हूँ, आप अपनी चाहतों से बँधे हुए हैं। मैं आपका बहुत आभारी हूँ कि आपने मुझे याद दिलवा दिया कि कल स्वतंत्रता दिवस है। आओ! कल हम सभी बाहर के झूठ और बेड़ियों को तोड़कर आजाद हो जाएँ।

एक प्रेमी: *महाराज जी! कल गुरु का दिन भी है।*

महाराज जी: गुरु का दिन कल है या अभी है?

एक प्रेमी: *हाँ जी! कल गुरुवार है।*

महाराज जी: आज भी गुरुवार है। सतगुरु गुरुवार से बँधा हुआ नहीं वह मुक्त है। गुरु आपको मुक्त करने के लिए आता है। वह आपको सच के साथ का सम्पर्क देता है, सच का संपर्क आपको सभी बाहरी बंधनों से मुक्त कर देता है। क्राईस्ट ने कहा है, ''जो लोग रोज़ाना जीते जी नहीं मरते वे मेरे अनुयायी नहीं हैं।''

स्वतंत्रता दिवस बाहर रहने वाले लोगों की पहुँच में नहीं है। बाहर की आजादी तभी आती है जब जरुरतों की जरुरत न रहे, कोई भी सेना या किसी और चीज की जरुरत न रहे; जब हर एक व्यक्ति को बिना किसी तनाव के अपनी आजादी का हिस्सा मिलेगा तभी परमात्मा की बादशाहत इस धरती पर आएगी।

सन्त आपको शारीरिक, सूक्ष्म व कारण के सभी बंधनों से मुक्त करने के लिए आते हैं और सन्त आपको बताते हैं कि आगे

क्या करना है? आप इस कमरे में बंद होकर न रह जाएं अगर आप ऊपर जाएंगे तो वहाँ आपको मुक्त हवा मिलेगी। जब आप स्थूल शरीर से ऊपर उठेंगे तो आगे सब मुक्त है। जब आप सब कामनाओं से मुक्त हो जाएंगे तो आप असल में आजाद हो जाएंगे।

सभी संतों ने और दसवें गुरु ने भी यही कहा है कि कामनाहीन बनें। बिना किसी पुरस्कार की कामना से किए गए कार्य सच्चे हैं अगर आपको उसका कोई मुआवज़ा चाहिए तो स्वाभाविक है कि आप बंधन में हैं।

एक प्रेमी: *कोई इच्छा मुक्त अवस्था तक कैसे पहुँच सकता है?*

महाराज जी: आप Seven Paths to Perfection नामक किताब पढ़ें। सच्चाई आजाद है। जब आप सच से जुड़ जाते हैं तो आप मुक्त हो जाते हैं, सारा अंधकार हट जाता है। आप एक ऐसे मकान हैं जहाँ स्वाँस लेने के लिए हवा भी नहीं दी जाती, वहाँ का वातावरण दमघोंटू है। आप ऊँचे आंनद में आएं। क्या आप इस संकरे मकान से बाहर नहीं आना चाहते? सन्त नामदान वाले दिन ही आपको बताते हैं कि कैसे बाहर आना है। जो लोग अपनी इच्छानुसार जाते-आते हैं वे मुक्त हैं। मैं आशा करता हूँ कि आप कल स्वतंत्रता दिवस का आनंद उठाएंगे। अगर आप सभी आजादी का मज़ा उठा रहे होते तो मुझे ये सब शक्लें यहाँ दिखाई नहीं देती।

एक प्रेमी: *आप हम सब पर बहुत दया बरसा रहे हैं। हम इसका बदला कैसे चुका सकते हैं?*

महाराज जी: सबसे पहले गुरु की हिदायतों का पालन करें। कोई शिकायत नहीं, गुरु जो भी देता है उसे खुशी से स्वीकार करें। आमतौर पर हम शिकायतें ही करते हैं।

एक प्रेमी: *महाराज जी! अगर हमें कोई एक वस्तु न मिले तो हम बड़-बड़ाने लगते हैं?*

महाराज जी: जो भेड़ ज्यादा मिमयाती है उसके मुँह से ज्यादा खाना गिरता है। मैं आपसे कहता हूँ कि आप अपने अभ्यास को ठीक रखें, भजन में ज्यादा समय लगाएँ। रोजाना जीवित मरें यह आपको ज्यादा आनन्द देगा। सबसे पहले सौ प्रतिशत गुरु के हुक्मों की पालना करें फिर गुरु के स्वभाव व आदतों को अपने अदंर विकसित करें। यह केवल ग्रहणशीलता के जरिए ही प्राप्त होता है, आप दो तिहाई ज्यादा कमाएंगे।

मैं चाहता हूँ कि आप स्वतंत्रता दिवस का आनंद उठाने के लिए जाकर तैयार हो जाएं। परेड व भाषण आपको परतंत्र बनाते हैं, आप इनसे ऊपर उठें।

एक प्रेमी: *क्या मन, वचन व कर्म से सच्चे होना काफ़ी नहीं?*

महाराज जी: इतना ही काफ़ी नहीं है। अभी कुछ और भी जरुरी है अगर आप परमात्मा के नाम में अपने गुरु की मीठी याद रखते हैं तो आप ग्रहणशील बन जाते हैं। आप केवल तीन मिनट की खामोशी से आजादी की चाहत रख सकते हैं।

एक प्रेमी: *हमारे प्यारे सतगुरु! अगर किसी की आपके साथ जाने की महान इच्छा हो और वह किसी की भी परवाह न करे वह केवल आपके साथ ही जाना चाहे तो?*

महाराज जी: अगर यह सच है तो वह आपको मिलेगा, आप वहाँ पहुँच गए हैं लेकिन आप उसे जान नहीं रहे। आप कभी भी अकेले नहीं हैं।

***

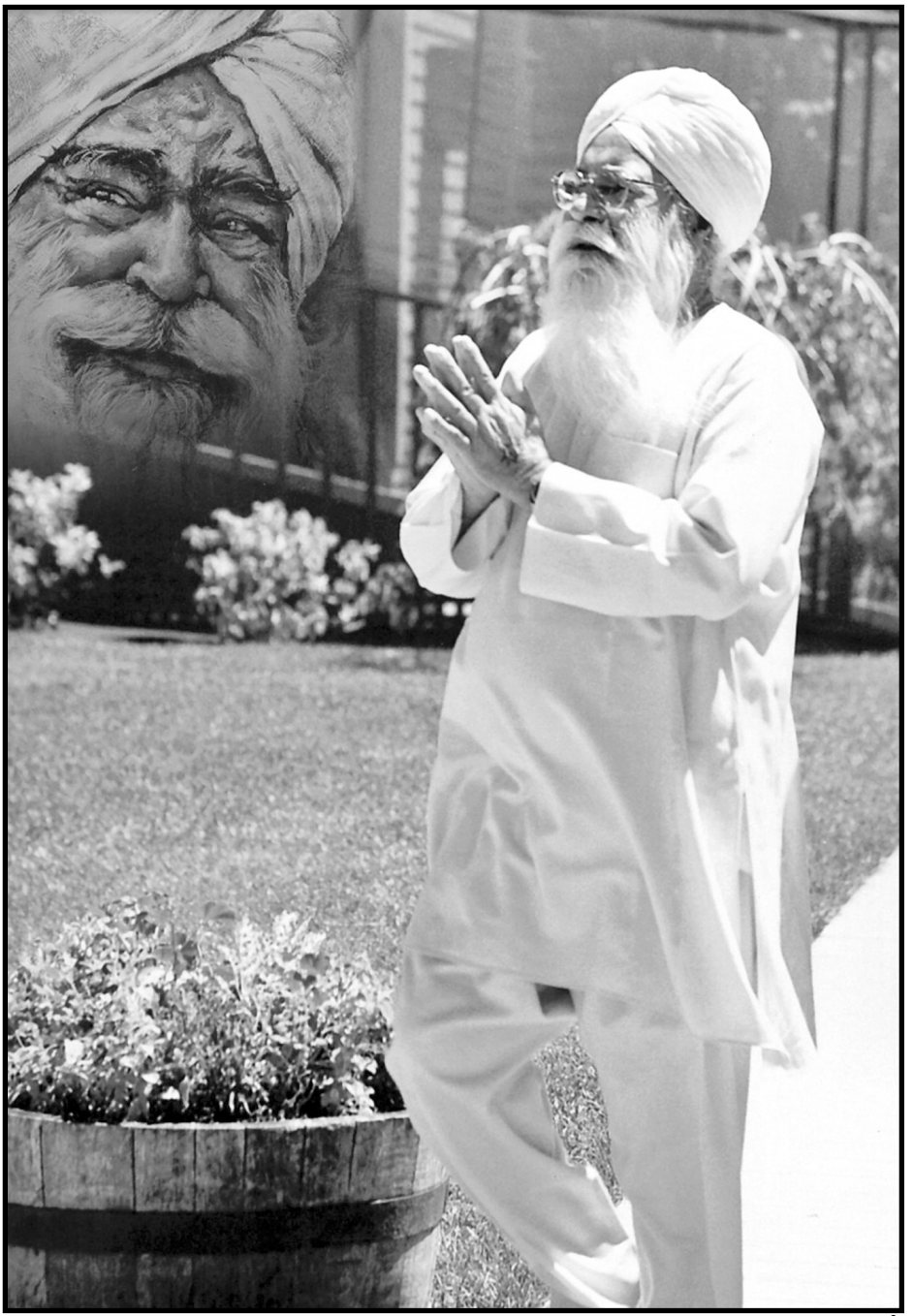

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

अजायब कृपाल नूं याद करदा

23 जून 1983 DVD No -511 (3) कोलंबिया

हम सबको पता है कि जिस औरत के पति के अंदर सभी किस्म की खूबियाँ हों, वह दीन-दुनिया का मालिक हो अपनी पत्नी की हर प्रकार की देखभाल करता हो, उससे प्यार करता हो और उसकी हर जरुरत को पूरा करता हो। ऐसा प्यार दुनियादार कर ही नहीं सकते क्योंकि दुनियादारों का प्यार मतलब का होता है। हम लोग विषय-विकारों में प्यार को गंदा कर लेते हैं।

आप सोचें! जिसके पति में इतनी खूबियाँ हों और वह परदेस चला जाए तो उस औरत पर क्या बीतेगी? यह मेरी अपनी कहानी है क्योंकि मेरी शादी उस परमपिता कुलमालिक कृपाल के साथ हुई थी। पता ही नहीं लगा कि कब मेरे सुहाग के दिन बीत गए? मेरे दिल में उस विछोड़े का बहुत दुख है। जिस दिन उन्होंने चोला छोड़ा मैं अपने कपड़े फाड़कर घर से चला गया। आज भी मेरे दिल में उतना ही दर्द है। मैं अपने आपको खोया हुआ महसूस करता हूँ।

हिन्दुस्तान में पश्चिम की तरह बच्चों को अपनी मर्जी से शादी करने की आजादी नहीं, माता-पिता बच्चों की शादी तय करते हैं, बच्चा उस शादी को मंजूर करता है हालाँकि लड़के ने लड़की नहीं देखी होती और लड़की ने लड़का नहीं देखा होता। जिस वक्त मैं जवान था उस वक्त कोई भी बच्चा माता-पिता को शादी के लिए मना नहीं कर सकता था। मैंने उस वक्त अपने माता-पिता को शादी के लिए मना कर दिया तो मेरी माता मुझे शादी करने के लिए प्रेरित करती क्योंकि मैं उनका इकलौता बेटा था, मैं उनकी खुशी था। वह मेरी शादी को लेकर बहुत खुश थे कि वे मेरी शादी करेंगे।

जब मेरी माता मुझे शादी करने के लिए कहती तो मैं कहता जिससे मेरी शादी होनी है उस आदमी को आ जाने दो। तब मेरी माता कहती, ''आदमी की शादी आदमी से नहीं होती लड़की से होती है, तुम ऐसी बातें क्यों करते हो।'' मैं कहता कि गुरु नानकदेव जी महाराज ने कहा है:

ठाकुर एक सवाई नार।।

जग में मर्द सिर्फ एक ही है बाकी हम सब उसकी स्त्रियाँ हैं। मर्द वह होता है जो हर एक की इज्जत रखे, लाज रखे, शरण पड़े का उद्धार करे; हम मर्द नहीं मर्द बनने की कोशिश जरुर करेंगे। मेरे कहने का भाव यह है कि मुझे जिस सुहाग का इन्तजार था कि मुझसे शादी करने वाला आएगा। मेरी आशा पूरी करने के लिए वह खुद आया और उसने मेरी आत्मा के साथ शब्द-रुप होकर फेरे लिए। मुझे अपनी पत्नी बनाया लेकिन थोड़े दिनों बाद ही आप मुझे विछोड़ा दे गए पता नहीं! मुझमें ही कोई अवगुण था या आपका मन इस संसार से उठ गया, वह दर्द सहा नहीं जाता।

परसो सुबह आप अभ्यास पर बैठे थे तो मुझे अपने उजड़े सुहाग की याद आ गई। उस समय कुछ लाइनें लिखी कि मैंने इस सुहाग को प्राप्त करने के लिए क्या किया? वे लाईनें ये हैं:

अजायब कृपाल नूं याद करदा,
विच राजस्थान दियां झाड़ियां दे।

मैं एक बार हीर-राँझा का किस्सा पढ़ रहा था उसमें हजरत वारे शाह ने अंदर का भेद और रुहानियत के बारे में काफी कुछ लिखा है। उसमें हीर-राँझा का किस्सा है कि किस तरह राँझा ने एक हीर के लिए तख्त हजारे को छोड़ा। हीर के घर जाकर भैंसो

का रखवाला बना और बड़े कष्ट सहे। दिल को लानतें आई कि इस शख्स ने एक औरत के पीछे कितनी जायदाद छोड़ी। एक औरत के इश्क की खातिर किसी के घर में जाकर अजाली लगा। दिल में ख्याल आया की भगवान का मूल्य एक औरत जितना भी नहीं, तुझे कितनी कुर्बानी करनी चाहिए?

बुरा ईश्क त्रिया दा रोग यारों, जिहनूं लग जाए मार मुकावंदा ऐ।
बंदा भुख आराम नू दूर करदा कर्म शर्म ते धर्म गवांवदा ऐ।।

आप सब राजस्थान जाते हैं। आज आप वहाँ बाग, नहरें देखते हैं बड़ा हरा-भरा इलाका है, अनाज के रुप में हर चीज पैदा होती है लेकिन जिस समय मैं वहाँ गया था तब वहाँ झाड़ियो के सिवाय कुछ नहीं था, पानी तो बिल्कुल भी नहीं था। एक दफा भक्त नामदेव जी उस इलाके में गए उन्होंने पानी की समस्या को देखकर, वहाँ के लोगों का पानी से प्यार देखकर अपनी बानी में लिखाः

मारवाड़ में जैसे नीर बालहा त्यों नामें मन बीठला।

इस इलाके को मारवाड़ का इलाका भी कहते थे कि जिस तरह राजस्थान में मारवाड़ के लोग पानी से प्यार करते हैं वैसे ही मेरे दिल में भी परमात्मा के लिए उतना ही प्यार है। अगर वहाँ के मूल निवासियों को कोई राम-राम बुलाता तो वे जवाब देते, ''तू प्यासा होगा?'' उनके दिल में यही था अगर इसको राम-राम का जवाब दे दिया तो कहीं यह पानी न माँग ले!

मैंने गर्मी के महीने में दो किलो पानी से आठ पहर निकाले हैं और यह पानी नजदीक से नहीं मिलता था लगभग बीस मील दूर जाकर पानी मिलता था। उस वक्त राजस्थान की यह हालत थी लेकिन पंजाब में जहाँ मेरे पिता ने मेरे लिए घर बनवाया था उसमें हर तरह की सहूलियत थी, बाग-बगीचे थे उसने अच्छी से अच्छी

बिल्डिंग बनाई थी। मैं बताया करता हूँ कि बाबा बिशनदास जी ने इस गरीब आत्मा की नींव डाली। उन्होंने वह घर छुड़वाकर कहा, ''तू राजस्थान चला जा तेरी आत्मा को शान्ति देने वाला वहाँ आएगा।'' इसलिए इस शब्द में ऐसा लिखा है :

महल माड़ियां छड फकीर होया,
बुरे दुःख वियोग कन्न पाड़यां दे।

उन झाड़ियों के आस-पास कोई आबादी नहीं थी सिर्फ रेत ही रेत थी। मैंने वहाँ बैठकर उसे रात-दिन याद किया कि मैं तुझे जानता नहीं हूँ, अगर तू परमात्मा है तो मुझे जरुर मिल। जिसका यह नतीजा हुआ कि हजारों आदमी प्यार से खिंचे हुए मेरे पास आने लगे कि यह मालिक की याद में बैठा है। हम दुनियादारों को यह पता नहीं होता कि इसे कोई रास्ता मिला है या नहीं?

मेरी शोहरत सुनकर महाराज सावन सिंह का एक शिष्य जिसका नाम धर्मचंद था वह मेरे पास आया। उस समय मेरे पास बहुत आदमी बैठे थे, उसने सवाल किया, ''आप साधु हैं या स्वादु हैं?'' मुझे शुरु से ही आदत थी कि मेरे अंदर जो भी होता था मैं जरुर बता देता। मैंने धर्मचंद से कहा, ''न मैं साधु हूँ और न ही स्वादू हूँ अगर मैं स्वादु होता तो पंजाब में अपने घर में रहता लेकिन अभी मुझे साधु बनने का रास्ता नहीं मिला।''

बाबा बिशनदास जी ने मुझे ब्रह्म तक का भेद दिया था और कहा था कि इससे ऊपर जाकर साधु बनते हैं। धर्मचंद ने बताया कि मैं महाराज सावन सिंह जी का शिष्य हूँ तो मेरा उसके साथ बहुत प्यार बढ़ा क्योंकि मुझे महाराज सावन सिंह जी के बहुत करीब होकर बैठने का मौका मिला है।

जब सन्त चोला छोड़ जाते हैं तो कई पार्टियाँ बन जाती हैं। गुरु खुंबो की तरह उग आते हैं। जब धर्मचंद ने देखा कि इसे काफी लोग मानते हैं यह देखने में भी अच्छा है तो क्यों न हम इसे गुरु बना लें! और हम लोगों को तजुर्बे बताने शुरु कर दें। धर्मचंद ने कहा, ''आप गुरु बनें और हम आपके एजेन्ट बनते हैं।'' मैंने उससे कहा, ''मुझे सतसंग करना नहीं आता।'' धर्मचंद ने कहा, ''आप इस बात से बेफिक्र रहें।'' धर्मचंद बहुत पढ़ा-लिखा आलम-फाजल था उसे गुरुमत सिद्धान्त जुबानी याद था। धर्मचंद ने कहा कि सतसंग मैं किया करूँगा।

मैंने धर्मचंद को गुरु हरिराय की साखी सुनाई। मैंने सिक्ख इतिहास में यह साखी पढ़ी है कि जो झूठे गुरु बनते हैं उनके और उनके एजेन्टों के साथ क्या होता है? एक भारी जीवित अजगर को चींटियाँ खा रही थी। शिष्यों ने गुरु हरिराय से पूछा, ''इस जीवित अजगर को चींटियां क्यों खा रही हैं? इसका इनके साथ क्या लेन-देन का हिसाब है?''

गुरु हरिराय जी ने हँसकर कहा, ''यह बिना कमाई के झूठा गुरु बना, झूठे के पीछे लगने का यह नतीजा है कि इसके शिष्य चींटियाँ बनकर इससे बदला ले रही हैं। यह अजगर की योनि में जिंदा पड़ा है और चींटियां इसे तोड़-तोड़कर खा रही हैं।'' उस कहानी को पढ़कर बड़ा अफसोस होता है और डर भी लगता है कि बिना कमाई के कैसे पार उतरेंगे?

पाँच साल के बच्चे की क्या उम्र होती है? जब मेरे दिल की मिट्टी तैयार होने लगी मेरी याददाश्त से पहले ही परमात्मा ने सच्चाई की खोज के लिए मेरे दिल के अंदर तड़प पैदा कर दी। उस समय मेरे दिल में दर्द था कि मुझे गुरु मिले।

महला माड़ियां छड, फकीर होया,
बुरे दुःख वियोग कन्न, पाड़यां दे।

हिन्दुस्तान में बहुत बड़े-बड़े मठ है। मैं रूहानियत के नाम पर सब के पास पैदल चलकर गया। कई दफा तो खाना भी नहीं मिलता था। भुने हुए चने पास रखे होते थे चने चबाकर थोड़ा सा पानी पी लेता था। कई लोग मुझसे कहते कि आराम की जिंदगी छोड़कर तू किस तरह दर-दर की ठोकरें खा रहा है। कभी कहीं जाता है और कभी कहीं जाता है, तेरे दिमाग में कोई नुख्स तो नहीं?

बोल माता अजायब दी मत देवे,
बच्चा मांण लै सुख सरदारियां दे।

मेरे माता-पिता ने मुझे दुनिया के सारे सुख दिए। मेरे माता-पिता कहते कि जब तेरे घर में सब कुछ है तो तू ऐसी हालत में क्यों फिरता है? उस समय हिन्दुस्तान में कारें-जीपें नहीं थी। घोड़े की सवारी बड़ी मशहूर मानी जाती थी। पंजाब में मुक्तसर साहब में आम घोड़ों की शर्तें लगती थी। जो घोड़ा सबसे अव्वल आया मेरे पिता उस जमाने में मेरे लिए पाँच हजार का घोड़ा लेकर आए थे। उस समय पैसे की बहुत कद्र थी।

मुझे बचपन से ही अकेले सोने की आदत है। मेरी माता मेरे लिए मुलायम बिस्तर बिछाया करती थी। जब मेरी माता अपने कमरे में चली जाती तो मैं जमीन पर बोरी बिछाकर सो जाता। सुबह तीन बजे जब माता जी ने आना तो मैं उनकी आवाज सुनकर बोरी से उठकर बिस्तर पर सो जाता कभी-कभी पकड़ा जाता तो माता बहुत नाराज होकर कहती, ''तेरे लिए सभी सुख हैं, तू हमारा कहना क्यों नहीं मानता?''

नहीं जाऊ बीमारी शरीर विचों,
जीहनूं डंग गए नाग ऐह झाड़ियां दे।

मैं जिस इलाके में रहता था आजकल तो जमीनें आबाद हैं वहाँ साँप नहीं है पहले वहाँ बहुत जहरीले साँप होते थे। साँप डंक मारकर कहता उस तरफ गिर। मैं कहता था जिसको इश्क के नाग डंक मार गए हैं उनकी कोई दवाई नहीं है। जब तक वह खुद आकर मरहम न लगाए जिसके वियोग में वह रो रहा है, तड़प रहा है।

कृपाल बाज ना दुःखड़े दूर हून्दे,
मिलदे वैद्य ना इश्क दियां नाड़ियां दे।

जब गुरु नानकदेव जी को परमात्मा से इश्क हुआ। तब आपके माता-पिता ने माँदरी बुलाए, वैद्य बुलाए कि देखो! इसे कोई भूत-प्रेत चिपटा है या फिर इसे अंदर का कोई रोग हो गया है? गुरु नानकदेव जी ने अपनी दर्द भरी कहानी खुद लिखीः

वैद्य बुलाया वैदगी पकड़ ढ़िढ़ोले बाँह, भोला वैद्य न जाणें कर्क कलेजे माँह।।

दोपहर का समय था गुरु नानकदेव जी अपने घर से निकले हमें पता ही है कि दुनियादार लोग तानें मारते हुए कोई वक्त हाथ से नहीं निकलने देते। उन लोगों ने कहा इसकी हालत देखो! यह कालू का बेटा नानक है इसे भूत चिपटा हुआ है, इसके माता-पिता इसका ईलाज नहीं करवाते। आपने कहाः

कोई आखे भूतना कोई कहे बेताला, कोई आखे आदमी नानक बेचारा।।

कोई कहता है कि देखो! भूत जा रहा है, कोई कहता है देखो! नानक बेचारा जा रहा है और कोई कहता है कि यह तो पागल है कोई कहता कि कालू का बेटा नानक जा रहा है।

अक्खां नाल लगा के सन्त अक्खां,
रस खिचदे वांग घुलाड़ियां दे।

सन्त हमारे अंदर आँखो के जरिए रूहानियत भरते हैं लेकिन आँखों को वैसा बनने में समय लगता है। मैंने एक शब्द में बोला हैः

इक अक्ख कौडी के मुल्ल दी ऐ, इक अक्ख मोती नाल तुलदी ऐ।

सच्ची दुःखिऐ अजायब दी आवाज सुण के,
जंदे खुले कृपाल दियां ताड़ियां दे।

मैं न तो परमपिता कृपाल के किसी शिष्य से मिला था, न उनकी जिंदगी से वाकिफ था। मेरे पास तो सिर्फ उनकी याद थी कि तू जहाँ काम कर रहा है मुझे मिल। बहुत सी ऐसी भी घटनाएँ घटी हैं अगर किसी के दिल में सच्ची तड़प और सच्चा प्यार है चाहे उस वक्त परमात्मा किसी पोल पर काम न करता हो तो जो सन्त पहले सच्चखंड पहुँच जाते हैं वे प्रकट होकर नामदान भी दे जाते हैं।

जिस तरह चरणदास को सुखदेव मुनि ने नामदान दिया था। हालाँकि सुखदेव मुनि को शरीर छोड़े हुए काफी समय हो चुका था वह भगवान कृपाल की पोल पर काम कर रहा था। जब मुझे सच्चे मन से पुकार करते हुए कई साल हो गए तब आपने पुकार सुनी तो आपकी समाधि के ताले खुल गए और आप उस पुकार को पूरा करने के लिए तीन सौ मील का रास्ता तय करके राजस्थान आए।

परमपिता परमात्मा कृपाल हमेशा ही कहा करते थे कि वह महापुरुष पहाड़ की चोटी पर खड़ा होता है और उसे पता होता है कि आग कहाँ लगी है और किसके दिल में तड़प है? वह वहाँ जरुर पहुँचता है। आप महान थे आपकी महिमा बयान नहीं की जा सकती। आपके देने के ढंग बहुत न्यारे थे। जिंदगी के बहुत साल

आपकी याद में बिताए, मिलाप की घड़ी बीतने में ज्यादा समय नहीं लगा। मैं हमेशा कहा करता हूँ कि जब तक पूरा शिष्य न मिले तब तक गुरु का पता नहीं लगता कि यह कच्चा है या पक्का है? जब सच्चा शिष्य मिलता है तो झूठा गुरु भागता है कि अब ये कुछ माँगेगा। जैसे सच्चा गुरु भाग्य से मिलता है वैसे ही सच्चा शिष्य भी भाग्य से ही मिलता है।

जब मुझे परमपिता कृपाल मिले तो आपने कहा, ''तू दिल्ली चलकर आश्रम संभाल।'' मैंने हँसकर कहा, ''क्या मैंने ईंटे सिर में मारनी है? ईंटे यहाँ भी बहुत पड़ी हैं। पंजाब के घर में बहुत ईंटे पड़ी हैं। बाबा बिशनदास जी का भी बहुत बड़ा आश्रम था। यहाँ खूनी चक में भी काफी बड़ा आश्रम है। मैं तो तुझे चाहता हूँ मैंने तेरी खातिर सारी जिंदगी लगा दी, मुझे तेरी जरुरत है।''

कोई दुध मंगे, कोई पुत मंगे, आशिक मंगदा इक दीदार तेरा।।

सन्तों के पास अनेकों किस्म के लोग आ जाते हैं। कोई उनकी जायदाद की तरफ देखता है कोई उनकी संगत की तरफ देखता है और कोई उनको ही माँगने के लिए आ जाता है। जब सन्त कोई बड़ा आश्रम बना लेते हैं तो प्रेमियों को सन्त दिखने बंद हो जाते हैं आश्रम ही दिखाई देता है कि यह मुझे चाहिए।

मेरे पास खूनी चक आश्रम में कुछ फौजी आए। मैंने उन्हें बड़े प्यार से खाना खिलाया। वे खाना भी खा रहे थे और सोच भी रहे थे कि इसकी शादी तो हुई नहीं कोई बाल-बच्चा भी नहीं है तो यह इतना बड़ा मकान किसको देगा? आखिर उन्होंने अपने मन का भाव निकालकर कहा, ''आपने इतना बड़ा मकान क्यों बनवाया है क्या इसकी वसीयत करवा दी है?'' मैंने हँसकर कहा आप इतना

फिक्र क्यों कर रहे हैं क्या बनाने वाले को फिक्र नहीं? मैं जब 77 आर.बी. की एक झोंपड़ी में बैठा था तब मुझसे किसी ने यह नहीं पूछा था कि इसकी वसीयत करवाई है या नहीं?

कुछ समय बाद परमपिता कृपाल खूनी चक आश्रम आए और आपने मुझसे कहा, ''संसार में एक गलती तो सन्त भी करते हैं। सन्त प्रेमियों के फायदे के लिए मकान बनाते हैं लेकिन प्रेमी उस मकान को अपने अंदर बसा लेते हैं।'' फिर आपने कहा, ''कितना अच्छा हो कि मेरे रहते ही तू यह आश्रम छोड़ दे, यहाँ से कोई सामान न उठाए और ये पशु लोगों की लड़कियों को बाँट दे।''

मेरी बंधी हुई पगड़ी अलमारी में रखी थी मैंने वह भी नहीं उठाई। एक दफा तो मन को झटका लगा कि क्या होने लगा है? आखिर मन में ख्याल आया कि तू जिसके साथ संपर्क बनाना चाहता है वह आ गया है, अब उसकी मर्जी है वह तुझे जिस तरह भी रखे तू उसी तरह रह। मैं आपके रहते ही वहाँ से चल पड़ा।

मुझे परमपिता कृपाल का हुक्म उसमें से सिर्फ एक बैल रखने का था, वह बैल अभी भी मेरे पास है। आपका वाक था कि ये बैल तुझे कमाई खिलाएगा और वाक्य ही वह बहुत अच्छा बैल है और बड़ी अच्छी कमाई खिला रहा है।

लोग कहते हैं कि महाराज कृपाल 16 पी.एस. नहीं गए थे। आप कुर्बानी करके देखे! वह परमात्मा बेइंसाफ नहीं, वह जरुर आता है वह दिल की जानता है। गुरु जब भी किसी के पास जाए तो क्या किसी से परमिट लेकर जाए? गुरु देह नहीं शब्द होता है। जिस समय वह सतसंग कर रहा होता है उस वक्त किसी की संभाल भी कर रहा होता है। मैंने अपने आपको किसी जातिय

झगड़े में नहीं डाला। मैंने आपके आश्रम के लिए कोई पार्टी नहीं बनाई, मैं किसी झगड़े में नहीं पड़ा। मैंने हमेशा यही कहा कि मैंने गुरु को माँगा था और मुझे गुरु मिल गया।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''आप किसी ऐसे के पास जाएं जिसे डेरे या जायदादों की जरुरत न हो। जो मेरे साथ जुड़ा है वह आपको मेरे साथ जोड़ सकता हैं।'' परमपिता कृपाल अपने गुरु महाराज सावन सिंह जी के चोला छोड़ने के बाद चुप करके उनके आश्रम को माथा टेककर आ गए, उन्होंने कोई झगड़ा नहीं किया। उस आश्रम में आपका बहुत अच्छा मकान बना हुआ था आप वह मकान छोड़कर चले आए।

जद कूक सुणी 'अजायब' दी गई कलेजा चीर,
आसन छड सच्चखंड दा आऐ कृपाल अखिर।

यह बहुत लम्बा संघर्ष था जिसे मैंने बहुत शार्ट करके बताया है। लम्बा संघर्ष करने के बाद ही उस परमपिता कृपाल ने दया की।

मेरे कहने का यह भाव नहीं कि आप अपना घर-बार छोड़ें, बाल-बच्चे छोड़ें। आप अपने परिवार में अपने समाज में रहें, अपनी जायदादें अपने पास रखें। ऐसी आत्माएँ सन्तों के साथ ही आई होती हैं वे ही ऐसा कुछ कर सकती हैं। ऐसी आत्माएं ही लोगों को नमूना बनकर दिखाती है।

चुनाव करते समय सन्त किसी का लिहाज नहीं करते, जिसके पीछे संगत को लगाना होता है उसे अलग ही बना लेते हैं। वह कभी भी संगत को अंधे के पीछे नहीं लगाते। जिन आँखों में आँखें डालनी होती है वे आँखें पहले ही तैयार कर लेते हैं। उन आँखों को बनाने में पता नहीं कितने ही साल लग जाते हैं। ***

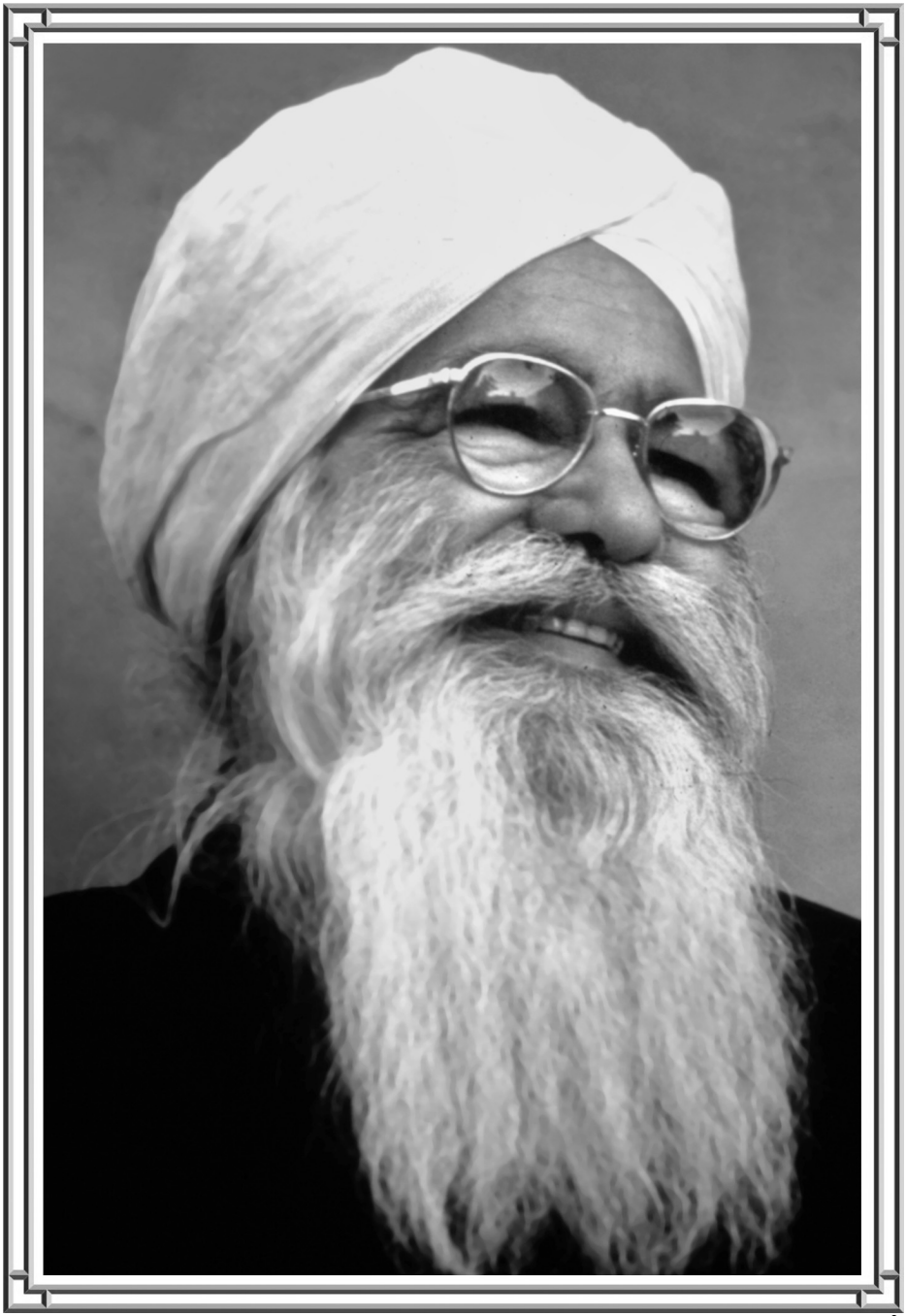

सतसंग - परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

हम कैसे जागें?

(गुरु नानकदेव जी की बानी)

आज से पाँच सौ साल पहले हिन्दुस्तान में काशी-बनारस ही शिक्षा का केन्द्र था। उस समय का समाज पंडित, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में बँटा हुआ था। उस समय केवल पंडित ही विद्या प्राप्त करने के अधिकारी थे, विद्या का ज्यादा प्रसार नहीं था। जिन भी लोगों ने विद्या प्राप्त की वह पंडित बनकर ही की।

उस समय गुरु गोबिंद सिंह जी ने अपने कुछ सेवकों को पंडितों का भेष धारण करवा कर विद्या प्राप्त करने के लिए काशी भेजा था। पंडितों को विद्या का अहंकार था। एक बार एक पंडित की गुरु नानकदेव जी के साथ वार्ता हुई तो उस पंडित ने कहा, ''मुक्ति पढ़-पढ़ाई में है।'' गुरु नानकदेव जी ने उसे अपना तजुर्बा बताया कि मुक्ति 'नाम' में है।

एक ऐसा पंडित था उसे जब भी किसी साधु-महात्मा की जानकारी मिलती वह उसके साथ शास्त्रों पर चर्चा करता। जो उससे हार जाता पंडित उसके ग्रन्थ छीन लेता। एक बार वह पंडित बहुत सारी किताबें लादकर गुरु नानकदेव जी के पास बातचीत करने के लिए आया। गुरु नानकदेव जी ने उसे बताया कि मुक्ति 'नाम' में है। वह नाम लेने के लिए तैयार हुआ तो गुरु नानकदेव जी ने सोचा कि इलाज करने से पहले पेट साफ करना जरूरी है।

गुरु नानकदेव जी ने उससे कहा, ''तुमने पहले जो गुरु धारण किया हुआ है तुम उसकी पूजा करते हो; पहले उससे मेल-मिलाप करो।'' वह पंडित आगे जाकर देखता है कि ब्रह्मा, विष्णु, शिव

और स्वर्गों का राजा इन्द्र, महात्माओं का रूप धारण करके बैठे हुए हैं। उस पंडित ने उन्हें नमस्कार करके कहा, ''मुझे उपदेश दें।''

वे महात्मा पंडित के दिल की बात जानते थे कि यह किस चीज़ का पुजारी है? उन महात्माओं ने उससे कहा, ''तेरा गुरु उस सुनहरे मंदिर में बैठा है।'' जब वह उस मंदिर में गया तो उसे वहाँ एक औरत मिली। उस औरत ने इस पंडित की जूतों से पिटाई की लेकिन वह उस औरत का हाथ नहीं रोक सका।

जब वह पंडित वापिस आया तो महात्माओं ने पूछा कि तुम इतनी जल्दी कैसे वापिस आ गए? क्या उपदेश लेकर नहीं आए? पंडित ने कहा, ''वहाँ एक बहुत कड़े स्वभाव की औरत थी। उसने मुझसे कोई बात नहीं की मुझे बहुत पीटा।'' महात्माओं ने कहा कि तुम पढ़े-लिखे तो बहुत हो लेकिन तुम्हारा असली गुरु वह माया ही है क्योंकि तुम माया के पुजारी हो अगर संसार समुंद्र से पार होना चाहते हो तो गुरु नानकदेव जी से 'नाम' लो।

आखिर पंडित ने गुरु नानकदेव जी के पास आकर सिर झुकाकर कहा, ''आप जो उपदेश देंगे, मैं उस पर श्रद्धा से चलूँगा। आप जो कहेंगे, मैं वही करूँगा।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

पढ़या मूर्ख आखिए, जिस लभ लोभ अंहकारा।

सन्त-महात्मा पढ़ने-लिखने को बुरा नहीं कहते। हमें दुनिया की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए लेकिन परमात्मा की भक्ति के लिए 'सुरत-शब्द' के अभ्यास की और 'शब्द-नाम' की कमाई की जरूरत है। इस शब्द में गुरु नानकदेव जी उस पंडित को बड़े प्यार से समझा रहे हैं, गौर से सुनेंः

पड़ि पड़ि गडी लदीअहि पड़ि पड़ि भरीअहि साथ॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''चाहे आप पढ़-पढ़कर उन पोथियों से गाड़ियाँ भर लें और चाहे उन्हें ऊँटों पर भी लाद लें।''

पड़ि पड़ि बेड़ी पाईऐ पड़ि पड़ि गडीअहि खात॥

आप कहते हैं, ''चाहे कितनी किताबें-पोथियाँ पढ़ लें। दरिया के पार जाना हो तो बेड़ियाँ भर लें। वे ग्रन्थ पुराने हो जाएँ, उन्हें मिट्टी में दबाकर नए ले लें लेकिन मुक्ति फिर भी नहीं होगी।''

पड़ीअहि जेते बरस बरस पड़ीअहि जेते मास॥

आप कहते हैं, ''चाहे जिंदगी के सारे साल और सारे महीने पढ़ते रहें तब भी मुक्त नहीं हो सकते।''

पड़ीऐ जेती आरजा पड़ीअहि जेते सास॥

आप कहते हैं, ''चाहे सारी जिंदगी ऊपर नीचे आने वाले साँस-साँस तक पढ़ते रहें तब भी मुक्त नहीं हो सकते।''

नानक लेखै इक गल होरु हउमै झखणा झाख॥

गुरु नानकदेव जी उस पंडित को समझाते हुए कहते हैं, ''हमें 'नाम' मिल जाए, हम नाम की कमाई करें, सुरत-शब्द के साथ मिल जाएँ, वही घड़ी लेखे में है।'' कबीर साहब कहते हैं:

लेखे में सोई घड़ी बाकी के दिन बाद।

आप प्यार से समझाते हैं, ''शब्द-नाम की कमाई के बिना हम जो कुछ भी पढ़-लिखकर एक दूसरे से बहस करते हैं वह बेकार है, किसी लेखे में नहीं।''

लिखि लिखि पड़िआ॥ तेता कड़िआ॥
बहु तीरथ भविआ॥ तेतो लविआ॥

मैंने भी अपनी जिंदगी में देखा है कि हिन्दुस्तान में बहुत लोग भेष धारण कर लेते थे लेकिन आजकल लोग उतने भेष धारण नहीं करते। आमतौर पर उन लोगों का काम तीर्थों पर स्नान करना, पढ़-लिखकर बहस करना ही था।

हिन्दुस्तान में बहुत लोगों ने तीर्थस्थानों को रोजगार बनाया होता है। यात्री दस दिन किसी तीर्थस्थान पर तो दस दिन किसी और तीर्थस्थान पर जाते हैं। भेषी लोग किसी यात्री से कपड़ा, किसी से गुटका, किसी से और कुछ माँगकर इन्हें बेचकर अपना गुजारा करते हैं। इन लोगों में किसी ने साधुओं का भेष धारण किया होता है तो किसी ने माथे पर तिलक लगाकर सिद्ध पुरुष का रूप धारण करके माँगने का पेशा बनाया होता है।

गृहस्थी लोग भोले-भाले होते हैं, इनकी कमाई पवित्र होती है। ये अपनी कमाई भेषधारियों को दे देते हैं जिससे भेषधारी गांजा, शराब और कई किस्म के नशे करते हैं। गुरु नानकदेव जी किसी की निन्दा नहीं कर रहे। उन्होंने तीर्थ स्थानों पर जो देखा वही बयान किया है। आपने तीर्थों पर भक्ति करने वालों से चर्चा की और यह सिद्ध करने की कोशिश की है कि बाहर के रीति-रिवाजों से मुक्ति नहीं मिलती। मुक्ति 'नाम' में है।

बहु भेख कीआ देही दुखु दीआ॥ सहु वे जीआ अपणा कीआ॥
अनु न खाइआ सादु गवाइआ॥ बहु दुखु पाइआ दूजा भाइआ॥

आप कहते हैं, ''जो जितने ज्यादा भेष धारण करते हैं वे उतने ही दुख और परेशानियाँ उठाते हैं। जो पहले कर्म करके आए हैं

वह आज भोग रहे हैं। अन्न खाना छोड़कर मुँह का स्वाद बिगाड़ लेते हैं।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''ऐसे लोग एक रुपये का अन्न नहीं खाते बल्कि दस रुपये का दूध पीकर अपने आपको दूधाधारी कहलवाते हैं।''

महात्मा बताते हैं कि ऐसों के सेवक चोरी-छिपे उनके लिए अच्छे खाने लाकर रख देते हैं। जब प्रेमी दर्शनों के लिए आते हैं तो उनसे कहते हैं कि सन्त दूध पीकर ही गुजारा करते हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''अगर दूध के सहारे ही मुक्ति मिलती हो तो बच्चों की मुक्ति हो जानी चाहिए क्योंकि बच्चे सिर्फ दूध ही पीते हैं।''

बसत्र न पहिरै ॥ अहिनिसि कहरै ॥
मोनि विगूता॥ किउ जागै गुर बिनु सूता॥

कुछ इस किस्म के भी साधु होते हैं जो वस्त्र नहीं पहनते। जैसे जानवर वस्त्र नहीं पहनते, सर्दी-गर्मी में नंगे ही घूमते हैं। कुछ इस किस्म के साधु भी होते हैं जो मौन धारण कर लेते हैं। उन्हें जिस चीज की जरूरत होती है लिखकर मांग लेते हैं। जिस मन को दुनिया से हटाना था वही मन अंदर ज्यादा कल्पना करता है। गुरु नानक साहब कहते हैं, ''मौनी होने का क्या फायदा? बोलकर नहीं मांगा लिखकर मांग लिया।''

मैं पंजाब के दौले गांव में एक मौनी के पास गया, मैंने सेवा के लिए विनती की। मौनी जिस बोरी पर बैठा था उसने बोरी का एक कोना उठा दिया। मौनी के चेले ने कहा, ''सन्त त्यागी हैं माया को हाथ नहीं लगाते यहाँ रख दो, जब किसी चीज की जरूरत होगी इसे इस्तेमाल कर लेंगे।''

आप सोचकर देखें! अगर मुँह से मांग लिया जाए तो क्या हर्ज है? जबकि अंदर तो काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की इच्छाएं उसी तरह उठ रही हैं। हम जितना चुप करते हैं मन उतनी ही ज्यादा इच्छाएं पैदा करता है।

बाबा बिशनदास जी कहा करते थे, ''अगर चुप रहने से परमात्मा मिलता होता तो पशु कौन सी गुफ्तगू करते हैं? परमात्मा पशुओं को मिल जाता।''

पग उपेताणा॥ अपणा कीआ कमाणा॥
अलु मलु खाई सिरि छाई पाई॥

बहुत से ऐसे भी पंथ हैं जो जूते नहीं पहनते नंगे पाँव ही चलते हैं, ये लोग ट्रेन और हवाई जहाजों में सफर नहीं करते। एक ऐसा भी पंथ चला जिन्हें घोरी कहते थे। ये लोग नहाते नहीं अपना ही मैल खा जाते हैं। ये लोग अच्छे बुरे में भेद नहीं समझते लेकिन समझदार लोग ऐसों की आलोचना करते हैं कि इस तरह परमात्मा की भक्ति कैसे हो सकती है?

एक बार कबीर साहब के पास एक ऐसा आदमी आया जिसने बारह साल से कपड़े और जूते नहीं पहने थे। उसने अपनी कुर्बानी के बारे में बताया। कबीर साहब ने उससे कहा, ''आप जब तक अपनी आत्मा को 'शब्द-नाम' के साथ नहीं मिला लेते तब तक चाहे आप बिना कपड़ों और जूतों के रहें इस सबका कोई फायदा नहीं।''

नगरी फिरत जे पाइए जोग, बनके मृग मुक्त सब होत।
क्या नांगे क्या बांधे चाम, जब नाहीं चीनस आत्मराम॥
मूरखि अंधै पति गवाई॥ विणु नावै किछु थाइ न पाई॥

'नाम' के बिना कोई ठिकाना नहीं, मुक्ति नहीं। हम नाम के बिना इंसानी जामे को पवित्र नहीं कर सकते।

रहै बेबाणी मड़ी मसाणी॥ अंधु न जाणै फिरि पछुताणी॥

आप कहते हैं, ''कुछ ऐसे भी पंथ हैं जिनमें लोग अपने घरों को छोड़कर कब्रिस्तान और मढ़ी-मसानों में रहने लग जाते हैं। लोग उन्हें पूजते हैं कि यह बाबा भूतों से नहीं डरता। ऐसे लोग नाम की तरफ नहीं आते, आखिरी समय में पछताते हैं।''

बाबा बिशनदास जी जहाँ रहते थे उसके नज़दीक ही गांव वालों की कब्रें थी। वहाँ एक साधु आकर बैठ गया। लोग उसे पूजने लगे। बाबा बिशनदास जी ने उस साधु से कहा, ''अगर तुझे कोई करामात दिखानी है तो जिन्दा लोगों में जाकर रह। तू जानता है कि मरे हुए लोग कब्रों में से नहीं बोलते। तू यहाँ आकर इसलिए बैठा है कि कोई तुझसे ज्ञान की बात न पूछ ले।''

हम गृहस्थी लोग भ्रमों में फँसे होते हैं। जिन्हें हम कब्रों में छोड़कर आए हैं क्या वे वहीं बैठे हैं? महात्मा हमें समझाते हैं कि कब्रों में बैठने वाले तो अंधे हैं जो वहाँ बैठने में ही भक्ति समझते हैं। क्या हम लोग भी अंधे हैं जो उनके पीछे लगकर अपना जीवन बर्बाद करते हैं?

सतगुरु भेटे सो सुखु पाए॥ हरि का नामु मंनि वसाए॥

अगर सतगुरु हमारे अंदर 'नाम' टिका दे तो हमारे जन्म-जन्मातंरो के बुरे कर्म नाम की कमाई से खत्म हो जाते हैं।

नानक नदरि करे सो पाए॥
आस अंदेसे ते निहकेवलु हउमै सबदि जलाए॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि जब महात्मा हमें यह बताते हैं कि 'नाम' मुक्तिदाता है नाम ही हमारे बुरे कर्मों को राख कर सकता है तब हमारे दिल में ख्याल आता है कि नाम कौन सा मुश्किल है? महात्मा नाम मुफ्त में दे देते हैं कोई फीस नहीं लेते।

जिन महात्माओं की आँखें खुल जाती हैं वे पत्ते-पत्ते में उस परमात्मा की ताकत को काम करते हुए देखते हैं। ऐसे महात्मा कहते हैं, ''प्यारेयो! नाम प्राप्त करना अपने बस में नहीं। जिस जीव पर परमात्मा अपनी नजर करता है जिसका फैसला सच्चखंड में हो जाता है कि अब इसे दुखी दुनिया में हाजिर नहीं करना वही जीव सतसंग में आता है नामदान प्राप्त करता है। दिल में उत्साह पैदा करके इसी जन्म में अपना काम बना लेता है।''

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि सारी दुनिया सुख माँगती है दुख कोई नहीं माँगता। परमात्मा दया कर रहा है हम देखते हैं कि समय पर सूरज निकलता है दिन और रात होते हैं और समयानुसार मौत-पैदाइश हो रही है। उसी तरह नाम प्राप्त करना सतसंग में जाना सब परमात्मा ने अपने हाथ में रखा हुआ है।

भगत तेरै मनि भावदे दरि सोहनि कीरति गावदे॥

अब आप कहते हैं, ''मनमुख भी उसी परमात्मा के बच्चे हैं उनमें भी वही परमात्मा विराजमान है। परमात्मा को वही प्यारे लगते हैं जो परमात्मा की भक्ति के गीत गाते हैं। वही परमात्मा के दर पर शोभा प्राप्त करते हैं। इनके साथ जिनका मिलाप होता है ये उनके अंदर भी भक्ति का शौक पैदा कर देते हैं।''

परमपिता कृपाल कहा करते थे, ''परमार्थ भी एक छूत की बीमारी है। जैसे किसी एक को खारिश हो रही हो तो वह और

लोगों को भी खारिश की बीमारी लगा देता है। एक भक्त खुद भक्ति करता है वह हमारे अंदर भी भक्ति की खारिश पैदा कर देता है, हम भी भक्ति करने लग जाते हैं।''

नानक करमा बाहरे दरि ढोअ न लहन्ही धावदे॥

आप कहते हैं, ''नाम का मिलना बहुत से जन्मों के अच्छे कर्मों का इनाम है लेकिन जिनका कर्म नहीं बना वे उसके दर पर नहीं पहुँच सकते, उसकी भक्ति नहीं कर सकते।''

इकि मूलु न बुझन्हि आपणा अणहोदा आपु गणाइदे॥

आप कहते हैं, ''ऐसे लोग भी संसार में आते हैं जो यह नहीं जानते कि हम क्यों पैदा हुए हैं? हम इस जन्म से पहले कहाँ थे और आगे कहाँ जन्म लेंगे? ऐसे लोग अपने आपको समझदार समझते हैं लेकिन मालिक के प्यारों के उपदेश को ग्रहण नहीं करते और कहते हैं कि हम सब कुछ जानते हैं।''

हउ ढाढी का नीच जाति होरि उतम जाति सदाइदे॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि जिन्हें अपने आपकी समझ नहीं, उनके दिल में अहंकार होता है कि हम ज्यादा समझदार और अच्छे हैं। आप कहते हैं, ''मैं तो बहुत गरीब हूँ, नीच जाति का हूँ।'' गुरु नानकदेव जी बेदी जाति में पैदा हुए थे। हिन्दुस्तान में बेदी जाति की बहुत इज्ज़त है। कबीर साहब कहते हैं:

बुरा जो देखन मैं गया, बुरा न मिलया कोए।
जब देखया दिल आपना, मुझसे बुरा न कोए॥

कबीर साहब कुल मालिक थे। आप सदा ही जीवों की रक्षा करते रहे और आज भी कर रहे हैं। आप हमें बहुत प्यार से

समझाते हैं , ''प्यारे यो! परमात्मा को नम्रता प्यारी है, आप अपने अंदर नम्रता धारण करें।''

तिन्ह मंगा जि तुझै धिआइदे॥

गुरु नानकदेव जी कहते हैं, ''हे परमात्मा! मैं उनका मिलाप मांगता हूँ जो तेरी भक्ति करते हैं। पढ़ना बुरा नहीं लेकिन उसे समझना बहुत जरूरी है। परमात्मा की भक्ति करने वाला चाहे पढ़ा-लिखा हो, चाहे अनपढ़ हो वह परमगति को प्राप्त हो जाता है। हम प्यार से सतसंग में जाते हैं अगर हम सतसंग पर अमल करें तो हम इससे फायदा उठा सकते हैं।''

***

धन्य अजायब

16 पी.एस. रायसिंह नगर आश्रम में सतसंग के कार्यक्रम

07 से 11 सितम्बर 2019

04 से 06 अक्टूबर 2019

01 से 03 नवम्बर 2019

29, 30 नवम्बर व 01 दिसम्बर 2019